The Aunt's House

Jyotsna's mother, our aunt
Used to live opposite to our house.
A fenced house with tin shade in 700sq ft of land,
Crowded in one room, stay
Six sons, two daughters and aunty herself.
Uncle passed away long ago
I was a toddler then-
Counted were the days in a year
When they could cook and eat.
Even if they cooked once in the day,
The other half of the day was spent in hunger-
How hard aunty used to work
To feed and clothe her eight children somehow!
Someday it was the lack of coal that they couldn't cook,
Some other day it was the lack of rice.
On some other day again, in spite of having coal and rice,
They don't have anything to eat with.
Only some rice, salt, chillies and raw onions-
This was their meal after staying hungry for two days;
Still they ate till they were full.
If sometimes they had a very good menu,
It consisted of Rice-Lentils-Smashed potatoes.
As I grew up,
Gradually all of them got married and separated from their mother-
Eight children started having their own family,
All of them left aunty.
Aunty was badly struck by poverty.
She didn't have food, mostly fasted,
But her family was filled with the presence of her children
Today aunty is alone-
Slender physique ,
In malnutrition, the bones of her body can be well counted:
None of the eight children had the time yet,
None of them had the leisure to visit their mother.
Later, aunty was diagnosed with abdominal disease.

After prolonged illness, aunty passed away in Bangur hospital-
The house is now lying there like a skeleton.
The sons nowadays visit sometimes;
The second one came and went away with the tin shade,
The youngest has taken away the fences,
I saw the eldest one pulling off the bamboo poles.
The whole house is absent today-
The remains of aunt's house,
Is standing undressed like the whole family:

কাকিমার বাড়িটা

আমাদের উল্টোদিকের বাড়িতে থাকতো
জ্যোৎস্নার মা, আমাদের কাকিমা।
এককাঠা জমিতে বেড়ার ঘর টিনের চাল
একটা ঘরে গাদাগাদি করে
ছয় ছেলে, দুই মেয়ে আর কাকিমা,
কাকু মারা গেছে সেই কবেই
আমি তখন খুব ছোটো।
বছরে কদিন যে ওদের ঘরে রান্না হতো
গুনে বলা যায়,
যদিও বা রান্না হতো একবেলা
অন্যবেলা না খেয়েই কাটতো।
কি পরিশ্রমটাই না করতো কাকিমা আট ছেলেমেয়েকে
কোনোরকমে খাইয়ে পরিয়ে রাখার জন্য,
অভাবের সংসারে আজ কয়লা নেই বলে উনুন জ্বলত না
কাল কয়লা কিনতে গিয়ে চালের পয়সা নেই, রান্না হলো না
পরশু কয়লা, চাল আছে কিন্তু তরকারি হয়নি।
শুধু সাদা ভাত, নুন, লঙ্কা, পেঁয়াজ
দুদিন অভুক্ত থাকার পর ওটাই ছিলো ওদের খাবার,
তবু পেট ভরে খেতো সেদিন ওরা সবাই,
কোনো কোনো দিন খুব ভালো মেনু হলে
ভাত-ডাল-আলুসেদ্ধ।
আমি বড়ো হতে হতে একে একে
বিয়েসাদি করে সবাই যে যার আলাদা হলো
ধীরে ধীরে আট ছেলেমেয়ের সংসার হলো
সবাই ছেড়ে চলে গেলে কাকিমাকে,
কাকিমার অভাবের সংসার ছিলো, খাবার
জুটতো না, উপোস করেই কাটতো বেশিদিন
কিন্তু সংসারটা তবু ছেলেমেয়ে নিয়ে ভরা ছিলো।
আজ কাকিমা একা —
শীর্ণকায় চেহারা
অপুষ্টিতে শরীরের হাড় গোনা যায়,
আট ছেলেমেয়ের একজনেরও ফুরসত হয়নি,
কখনো ফুরসত হয়নি মাকে দেখতে আসবার।

শেষের দিকে উদরি হয়েছিল কাকিমার
দীর্ঘ রোগভোগের পর কাকিমা মারা গেলেন বাঙ্গুর হাসপাতালে।
বাড়িটা কঙ্কালের মতো দাঁড়িয়ে আছে আজও —
ছেলেরা মাঝে মাঝে এখন আসে
মেজোছেলে এসে টিনের চাল খুলে নিয়ে গেলো
ছোটো এসে বেড়াগুলো নিয়ে গেছে একদিন
বড়ছেলে দেখলাম বাঁশ খুঁটি ধরে টানাটানি করছে
গোটা বাড়িটাই আজ নেই —
গোটা পরিবারের মতোই বিবস্ত্র দাঁড়িয়ে কঙ্কালসার
কাকিমার বাড়িটার ধ্বংসাবশেষ।

चाची का घर,

हमारे घर के विपरीत रहती थी,

ज्योत्सना की माँ,हमारी चाची,

थोड़ी सी जमीन पर

एक ही कमरे में किसी तरह ठूसठूसकर रहते थे,

छः बेटे,चाची और उनकी दो बेटियां,

चाचा तो कब के गुज़र गए हैं,

मैं तब बहुत छोटी थी।

यह गिनकर कह सकते हैं,

साल में कितने दिन उनके घर में भोजन पकता था,

और तो और भोजन सिर्फ

एक वक्त ही पकता था,

दूसरा वक्त वे खाली पेट रहते ही रहते थे।

चाची आठ बच्चों का किसी तरह से पालन पोषण

करने के लिए, रातदिन एक करती थी।

अभावों से भरे घर में,

आज कोयला नहीं है तो चूल्हा नहीं जल सकता।

कल कोयले खरीदने जाओ तो चावल के पैसे नहीं है,खाना नहीं पक सकता।

परसों कोयले हैं,चावल भी है ,

लेकिन सब्जियां नहीं बनी।

दो दिन भूखे रहने के बाद

उनके नसीब में थे,सिर्फ सफ़ेद चावल,नमक,मिर्च,प्याज।

पर फिर भी सबलोग वहीँ पेट भरकर खाते थे।

किसीदिन अगर बहुत बढ़िया मेनू रहा तो वह क्या था ?

दाल-चावल-उबले आलू

मैं जैसे जैसे बड़ी होती गयी

एक कर सब की शादी हो गयी

और धीरे धीरे आठ बेटे-बेटियों का घर बस गया।

सबलोग चाची को छोड़कर चले गए।

चाची का घर अभावों से भरा था,भोजन नहीं मिलता है,

अधिकतर दिन उपवास ही रहना पड़ता था।

पर फिर भी परिवार बेटे-बेटियों से भरा था।

आज चाची अकेली है।

कृशकाय शरीर है।

कुपोषण के कारण हड्डियां गिनी जा सकती है।

आठ बच्चों को कभी फुर्सत नहीं मिली,

एकबार भी नहीं मिली,

माँ को देखने आने की ,

अंतिम दिनों में चाची को उदारी हुआ था,

लम्बे दिनों तक बीमारी से भुगतने के बाद बांगुर अस्पताल में देहांत हो गया।

घर आज भी कंकाल बना खडा है।

लड़के कभी कभी आते हैं,

मँझला बेटा आकर टिन का छत खोलकर ले गया।

छोटा बेटा बाड़ों को लेकर चला गया,एकदिन

मैंने देखा,एकदिन बड़ा बेटा बांस की खूंटियों को लेकर खींचातानी कर रहा है।

वह पूरा घर आज कहाँ है ?

पूरे परिवार की तरह ही निर्वस्त्र खड़ा है आज चाची का कंकाल सम घर।